विद्युत दर्पण

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति
त्रैमासिक गृह पत्रिका

अंक - 32 पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति, केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण, एफ-3, एमआईडीसी क्षेत्र, मरोल, अंधेरी (पूर्व), मुंबई -93 अप्रैल - जून 2014

सम्पादकीय

प्रिय साथियों,

जैसा कि आपको विदित है, ग्रिड प्रचालन की दृष्टि से अप्रैल से जून माह अत्याधिक महत्वपूर्ण होते हैं । इस अवधि में विद्युत की माँग अत्याधिक होती है और इस चरम मांग की पूर्ति करने के लिए ग्रिड प्रचालकों को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है । कभी-कभी यह संभव है कि लाभार्थी अपने ड्रॉवल शैड्यूल का पालन न करे । हालांकि जानबूझकर ना हो, लेकिन इस तरह की अनुशासनहीनता को ग्रिड प्रचालक सहानुभूति की दृष्टि से नहीं देखता। वह हार्ड टास्क मास्टर है और आईईजीसी (इंडियन इलैक्ट्रिसिटी ग्रिड कोड) एवं सीईआरसी (केन्द्रीय विद्युत नियामक आयोग) के नियमनों के अनुसार सख्ती से कार्रवाई शुरू करता है । अनुशासन को बनाये रखने के लिए कई लाइनें ओपन की जाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्रणाली को खतरा हो जाता है । ग्रिड अनुशासन; वाणिज्यिक तंत्र अर्थात डीएसएम(डेवीएशन सेटलमेंट मैकानिजम) जो पूर्ववर्ती यूआई (अनशेड्यूल इंटरचेंज मैकानिजम) का संशोधित और सशक्त रूप है, द्वारा भी प्रभावित होता है । डेविएशन की मात्रा तथा फ्रिक्वेंसी के आधार पर आर्थिक दंड लगाया जाता है । यह निवारक उपायों में से एक है लेकिन पहले से निहित कमी, जैसे स्पिनिंग रिजर्वी और सहायक सेवाएँ फिर भी रह ही जाती हैं । जहाँ तक पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति की भूमिका का संबंध है, ग्रिड प्रचालन को मजबूत करने के लिए बहुत सी योजनायें जैसे कि लाईन / यूनिट आउटेज प्लानिंग, रिएक्टिव ऊर्जा प्रबंधन, रक्षण नीति, एसपीएस आदि किया गया । पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति के कार्यालय प्रमुख के रूप में मेरे कर्तव्य एवं जिम्मेदारियाँ प्रभावी रूप से निभाने में मुझे हमारे सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से संपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ, जिससे इस वर्ष गर्मी के मौसम की विद्युत आपूर्ति की दृष्टि से चुनौती भरी अवधि सुचारू रूप से गुजरी ।

धन्यवाद !

सु.द. टाकसांडे

सु.द. टाकसांडे
सदस्य सचिव

अधिकार प्राप्ति का उचित माध्यम कर्तव्यों का निर्वाह है ।
-महात्मा गाँधी

राजभाषा समाचार

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर मुंबई की 15 वीं बैठक दिनांक 22 मई 2014 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, यारी रोड, अँधेरी में आयोजित की गई थी, जिसमें श्री लक्ष्मीकांत सिंह राठौर, उप निदेशक / सहायक सचिव एवं श्रीमती तरूप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक ने भाग लिया ।

- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 106 वीं बैठक दिनांक 2 मई 2014 को श्री सु.द.टाकसांडे, सदस्य सचिव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । बैठक में राजभाषा नीति अनुपालन से संबंधित सभी मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया ।

- अप्रैल - जून 2014 की तिमाही में 05.06.2014 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में 'कम्प्यूटर के विषय में बुनियादी जानकारी' विषय पर श्री शिव कुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक ने व्याख्यान दिया । कुल 2 अधिकारी एवं 15 कर्मचारियों ने इस कार्यशाला का लाभ लिया ।

समाचार दर्पण

हार्दिक बधाई

- श्री शिवा सुमन, सहायक निदेशक ग्रेड-I का शुभ विवाह सुश्री श्रावणी से दिनांक 15 जून 2014 को रामगुंडम में सम्पन्न हुआ । पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति परिवार की ओर से उनका हार्दिक अभिनन्दन !

बिदाई

- श्री दया नन्द सिंह, कार्यपालक अभियंता अधिवर्षिता की आयु प्राप्त करने पर दिनांक 30.04.2014 को सेवा निवृत्त हुईं । इस अवसर पर उन्हें भाव भीनी बिदाई दी गई । पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति परिवार की ओर से श्री दया नंद सिंह को उनके स्वस्थ एवं सुखमय सेवा निवृत्त जीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ !

*****

आशावादी व्यक्ति हर आपदा में एक अवसर देखता है;
निराशावादी व्यक्ति हर अवसर में एक आपदा देखता है ।
-विंस्टन चर्चिल

संपादक मंडल : श्री सु. द. टाकसांडे, सदस्य सचिव श्रीमति तरूप्रभा शैल, सहा. निदे. (रा.भा.), श्री शिव कुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक

सूरज एक मात्र आशा

श्री सु.द. टाकसांडे,
सदस्य सचिव

सर थॉमस अलवा एडिसन (1847-1931), महान वैज्ञानिक ने एक बार कहा था, 'मैं विद्युत को इतना सस्ता बनाउंगा कि सिर्फ अमीर लोग ही मोमबत्ती जला सकेंगे ।' सर एडिसन के इस कथन को 100 वर्ष से अधिक बीत गए, लेकिन इतने तकनीकी विकास के बावजूद हम सर एडिसन द्वारा देखे गए स्वप्न के एक इंच भी पास नहीं पहुँच पाये । विद्युत अब जीवन की मूलभूत आवश्यकता बन गई है और इसलिए इसकी उपलब्धता एवं खरीदने की क्षमता मानव के लिए बहुत ही महत्व का विषय है ।

विद्युत उत्पादन के लिए हम प्रथमत: जीवाश्म ईंधन पर निर्भर हैं । अन्य साधनों जैसे हायड्रो, न्यूक्लियर, विंड एवं सौर आदि से विद्युत का उत्पादन न तो मितव्ययी है और न ही निर्भरता योग्य । जीवाश्म ईंधन का संग्रह शीघ्रता से कम हो रहा है और कोयले की कमी के दाह को हम महसूस करने लगे हैं । शेल (SHALE) जैसी अन्य तकनीक आशाजनक है लेकिन वर्तमान तकनीक के स्तर के साथ यह मितव्ययी नहीं होगा और इसलिए सीमित है । भारत, कोयला आयात करके और उसे स्वदेशी कोयले के साथ सम्मिश्रण करके कोयले की कमी को पूरा करने की कोशिश कर रहा है जिसके परिणामस्वरूप विद्युत उत्पादन की कीमत बढ़ रही है । राज्य के लाभार्थी महंगी विद्युत खरीदने की बजाय भार नियमन अपना रहे हैं, जिससे सामान्य लोग विद्युत से वंचित रह जाते हैं । द्रव ईंधन एवं आरएलएनजी के प्रयोग द्वारा विद्युत उत्पादन, लाभार्थियों द्वारा अनुपालन किए जा रहे कीमतों पर आधारित (मेरिट ऑफ डिस्पेच) क्रम से मेल नहीं खाता । मानव जाति के लिए परमाणु ऊर्जा का परिचय एक बहुत ही दु:खद बात थी । हिरोशिमा एवं नागासाकी में हुए विध्वंस का परिणाम इतना भयंकर था कि चेर्नोबिल एवं फूकोशिमा जैसे परमाणु संयंत्र परमाणु ऊर्जा के विकास के लिए अहितकारी साबित हुए । एक अन्य समस्या है इस्तेमाल किए गए ईंधन के निपटान की, जो बहुत बड़ी समस्या खड़ी करती है और यह परमाणु ऊर्जा के विकास के लिए ज्यादा अनुकूल नहीं है ।

मेरी दृष्टि में उपरोक्त समस्या का दीर्धकालीन हल है सौर ऊर्जा । हमारा जीवन सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से सौर ऊर्जा के उपयोग से जुड़ा है । हम अपने जीवन के लिए जिन पौधों पर निर्भर रहते हैं, वे स्वयं अपने लिए ऊर्जा आपूर्ति के लिए सूरज पर निर्भर है । सौर ऊर्जा को विद्युत में परिवर्तित करने की वर्तमान तकनीक बहुत ही छोटे पैमाने पर है और लागत की दृष्टि से प्रभावी नहीं है । प्रकाश को फोटोवोल्टिक सेल्स के उपयोग द्वारा विद्युत में परिवर्तित करना यह एक आदिम तकनीक है । सौर ऊर्जा के विद्युत में परिवर्तन में बड़ी सफलता यह वर्तमान समय की आवश्यकता है । मानव जीवन के इतिहास में ऐसी सफलता की कई घटनाएँ घटी हैं । उदाहरण के लिए, इलैक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में संगणक एवं संचार के विकास ने पुरानी तकनीक की सभी सीमाएँ तोड़ दी और आम इंसान के लिए सुविधाएँ उपलब्ध करवायी । हम आशा करते हैं कि निकट भविष्य में सौर ऊर्जा के विद्युत में परिवर्तन में भी ऐसी ही सफलता प्राप्त होगी जिससे मानव के लिए विद्युत प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होगी । स्थानीय स्तर पर विद्युत का उत्पादन होने से विद्युत क्षेत्र को जो विद्युत के पारेषण एवं वितरण की समस्या का सामना करना पड़ता है उससे बचा जा सकेगा । यह हरित ऊर्जा होगी । भविष्य बहुत ही उज्जवल होगा बशर्ते कोई चमत्कार हो और किसी महान वैज्ञानिक के मस्तिष्क से नई तकनीक का अविष्कार हो । आशा है आने वाली पीढ़ी इससे लाभ लेगी ।

*****

प्रकृति का अमूल्य उपहार

- संकलन
श्रीमती तरूप्रभा शैल

मान लीजिए आपको किसी खेल में एक पुरस्कार मिला - जिसके अनुसार हर सुबह आपके उपयोग के लिए आपके बैंक खाते में रू. 86,400/- जमा होंगे । इस पुरस्कार के लिए कुछ नियम हैं जैसे:-

1. दिन भर में आपने जो व्यय नहीं किया, वह शेष राशि आपको फिर नहीं मिलेगी ।
2. आप किसी और के खाते में यह राशि स्थानांतरित नहीं कर सकते ।
3. आप इसे सिर्फ खर्च कर सकते हैं ।
4. हर सुबह आपके जागने पर आपके खाते में रू. 86,400/- उस दिन के लिए जमा होंगे ।
5. बैंक किसी भी समय ''खेल खत्म'' कहकर यह खाता बंद कर सकती है, और आपको नया खाता नहीं मिल सकेगा ।

ऐसे में आप क्या करेंगे ?

आप अपनी मनपसंद की हर एक चीज खरीदेंगे । सिर्फ अपने लिए ही नहीं, बल्कि अपने प्रियजनों के लिए भी, इतना ही नहीं अनजाने लोगों के लिए भी कुछ खरीदेंगे क्योंकि शायद आप अपने आप पर इतना पैसा एक दिन में खर्च न कर पायें । आप हर एक पैसा उपयोग में लायेंगे, सच है ना !

क्या आपको पता भी है ? यह खेल वास्तव में है । चौंक गये ना ? जी हाँ, हम सबके पास ऐसा ही बैंक है । लेकिन सच तो यह है कि हम उसे देखने की कोशिश नहीं करते ।
और यह चमत्कारी बैंक है 'समय'

1. हर सुबह जब हम जागते हैं तो हमें जीवन के 86,000 सेकंड मिलते हैं ।
2. जब हम रात को सोने जाते हैं, तब हमने जिस समय का उपयोग नहीं किया, वह हमारे खाते में आने वाले कल के लिए जमा नहीं होता ।
3. बीता हुआ कल हमेशा के लिए खर्च हो जाता है ।
4. अपने हिस्से का समय किसी और के नाम नहीं कर सकते ।
5. हर सुबह आपका खाता भरा जाता है, पर किसी भी समय बिना किसी चेतावनी के यह खाता बंद हो सकता है ।

अब सोचिये, आप हर रोज इन 86,400 सेकंड का क्या करेंगे ? यह सेकंड उन रूपयों से भी अधिक मूल्यवान है । अपने जीवन के हर इक पल का आनन्द लीजिए, उसका सार्थक उपयोग कीजिए, क्योंकि समय आपकी सोच से अधिक गतिमान है । जो आपके पास नहीं है, उसका गम करने में समय व्यर्थ गँवाने की बजाए जो आपके पास है, उससे समय को सार्थक बनाइए ।

*****

संपादक मंडल : श्री सु. द. टाकसांडे, सदस्य सचिव श्रीमति तरूप्रभा शैल, सहा. निदे. (रा.भा.), श्री शिव कुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक